Marking Scheme

Class: 10+2 Paper: Economics

Time: 3 Hours. M.M:-80

Q. No.	key	Marks
1		
i	(स) रॉबिंस	1
ii	(स) शून्य	1
iii	(अ) वृद्धि	1
iv	(द (संकुचन	1
V	(अ) पूरक	1
Vi	(ब) 02	1
Vii	ब) TR = AR × Q	1
Viii	(स) दोनों (ब, अ)	1
ix	(अ) खुली अर्थव्यवस्था	1
X	(द) इसे ना तो घरेलू आय में और ना ही राष्ट्रीय आय में सम्मिलित किया जाएगा।	1
Xi	(स) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया	1
Xii	(द) के बराबर	1
Xiii	(अ) MPC=ΔC/ΔY	1
Xiv	(स) अनुकूल	1
Xv	अ) अभिकथन)A) और कारण)R) दोनों सत्य हैं और कारण)R) अभिकथन)A) का सही स्पष्टीकरण है।	1
xvi	अ) अभिकथन)A) और कारण)R) दोनों सत्य हैं और कारण)R) अभिकथन)A) का सही स्पष्टीकरण है।	1
Part	**B (Micro Economics)**	
2.		
i	**मांग के नियम के दो अपवाद:-** **1.प्रतिष्ठा सूचक वस्तुएं:** प्रतिष्ठा सूचक वस्तुओं की मांग तभी अधिक होती है, जब इनकी कीमत अधिक हो। आभूषण, हीरे ऐसी महंगी चीजों की मांग कीमत अधिक होने पर अधिक होती है और कीमत कम होने पर काम हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यदि ऐसा ना हो तो उन्हें प्रतिष्ठा की वस्तुएं नहीं माना जाएगा। **.2गिफ्फन /निम्न कोटी वस्तुएं :** निम्न कोटी /घटिया वस्तुएं वस्तुओं में भी कीमत का प्रभाव धनात्मक **व आय प्रभाव** ऋणात्मक रहता है जैसे जैसे कीमत कम होती जाती है उनकी मांग कम होती-चली जाती हैऔर कीमत बढ़ाने के साथ उनकी मांग बढ़ जाती है। आय बढ़ने पर उनकी मांग कम हो जाती है। इसलिए जब इन वस्तुओं की कीमत घटती है तो मांग भी गिर जाती है और कीमत बढ़ने पर मांग भी बढ़ जाती है	1 1

ii	**<u>स्पष्ट लागतें तथा निहित लागतें-:</u>** **<u>स्पष्ट लागतें</u>** **:**स्पष्ट लागतें जेब से दी जाने वाली लागतें होती हैं – ये वास्तव में किए जाने वाले भुगतान हैं। फर्म द्वारा कर्मचारियों को दिया जाने वाला वेतन या फर्म द्वारा अपने कार्यालय के लिए दिया जाने वाला किराया स्पष्ट लागतें हैं। **<u>निहित लागतें</u>** **-:**निहित/अंतर्निहित लागतें उद्यमियों के अपने साधनों की अवसर लागत है। एक उद्यमी के अपने साधनों की लागत को निहित लागत कहा जाता है जो किसी अन्य को नहीं दी जाती। स्वयं की अपनी पूंजी का ब्याज, अपनी भूमि का लगान, अपने श्रम की मजदूरी इत्यादि स्वयं के स्वामित्व या स्वयं के द्वारा लगाये गये साधनों की लागतें हैं।	1 1
Iii	**<u>साधन के प्रतिफल व पैमाने के प्रतिफल में अंतर-:</u>** **<u>क्र .सं</u>** | **<u>आधार</u>** | <u>साधन के प्रतिफल</u> | <u>पैमाने के प्रतिफल</u> <u>1</u> | काल | साधन के प्रतिफल अल्पकाल में लागू होते हैं । | पैमाने के प्रतिफल दीर्घकाल में लागू होते हैं। <u>2</u> | साधन | साधन के प्रतिफल में एक साधन परिवर्तनशील और बाकी साधन स्थिर होते हैं। | पैमाने के प्रतिफल में सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं।	1 1
or	**or**	
iv	**<u>उपयोगिता व सीमांत उपयोगिता</u>:** **<u>उपयोगिता</u>** **:**किसी वस्तु में निहित वह शक्ति जो किसी भी आवश्यकता की संतुष्टि करती है, उपयोगिता कहलाती है। उपयोगिता किसी पदार्थ की वह क्षमता है जो आवश्यकताओं को पूरा करती है, संतुष्ट करती है। उपयोगिता को मापने के लिए युटिल इकाई का प्रयोग किया जाता है जो कि फिशर के द्वारा प्रयोग किया गया है । **<u>सीमांत उपयोगिता</u>** **:** किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं। उदाहरण के रूप में यदि पहले सेब खाने से इकाई उपयोगिता प्राप्त होती है और 15 दूसरा सेब खाने से कुल उपयोगिता हो जाती है 25। तो सीमांत उपयोगिता - =दोनों सेब खाने से प्राप्त कुल उपयोगिता - पहले सेब खाने से प्राप्त कुल उपयोगिता कुल उपयोगिता(इकाइयों की वृद्धि होगी 10 = 15 - 25) अतः दूसरी सेब से सीमांत उपयोगिता 10यूटिल हुई।	1 1
3. i	**<u>आर्थिक समस्या के क्या कारण:</u>**	

	आर्थिक समस्या का संबंध चयन की समस्या से है इस लिए इसे चयन की समस्या भी कहते हैं वैकल्पिक प्रयोगों वाले सीमित साधनों और असीमित आवश्यकताओं के कारण चयन की स्थितिआर्थिक समस्या उत्पन्न होती है/। **असीमित आवश्यकताएँ :**अपनी असीमित आवश्यकताओं से व्यक्ति पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं होता है। जैसे जैसे-आवश्यकताएं प्राथमिकता के आधार पूरी होती चली जाती हैं वैसेवैसे ही और आवश्यकता-एँ इनका स्थान लेती जाती है और यह प्रक्रिया निरंतर चली रहती है। इसलिए आवश्यकताओं की असीमितता को पूरा नहीं किया जा सकता है **सीमित साधन:** आवश्यकताओं की तुलना में आर्थिक साधनों की उपलब्धता कम रहती है अर्थात् आवश्यकताओं के मुकाबले उनका पूरा करने वाले साधन हमेशा ही कम रहते हैं,सीमित रहते हैं।)D>S ।(**साधनों के वैकल्पिक प्रयोग:** आवश्यकताओं को पूरा करने वाले साधनो के विभिन्न प्रयोग होते हैं। अतः इसमें आवश्यकताओं की तीव्रता के आधार पर या प्राथमिकता के आधार पर निर्णय लिया जाता है जिसमें चयन की समस्या या आर्थिक समस्या से गुजरना पड़ता है	1 1 1
ii	**मांग की कीमत लोच:** – **P = 5** **Q = 10** P_1 = 4 Q_1 = 12 $E_d = -\frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$ **P = 5** **Q = 10** $\Delta Q = Q_1 - Q = 12 - 10 = 2$ $\Delta P = P_1 - P = 4 - 5 = -1$ $E_d = -\frac{5}{10} \times \frac{2}{-1}$ = 1 **अतः मांग की कीमत लोच एक इकाई E_{d1} = है**	1 1 1
iii	**कुल लागत व सीमांत लागत तालिका:**	

उत्पाद की इकाइयां Units of Output	कुल लागत Total Cost	औसत लागत Average Cost	सीमांत लागत Marginal Cost

		1	9	9	-	1,1,1
		2	16	8	7	
		3	21	7	5	
		4	24	6	3	

iv

न्यूनतम कीमत प्रभाव:

प्रचलित संतुलित कीमत :जहां बाजार मांग वक्र और बाजार पूर्ति वक्र एक दूसरे को परस्पर काटते हैं वहां पर संतुलित कीमत का निर्धारण होता है

<u>न्यूनतम कीमत:</u>

न्यूनतम समर्थन कीमत वस्तु की वह न्यूनतम बिक्री कीमत है, जो सरकार द्वारा उत्पादकों के हितों की सुरक्षा के लिए संतुलित कीमत से अधिक निर्धारित की जाती है। उत्पादक अपना सारा उत्पादन इस कीमत पर बेचते हैं उन्हें इससे कम कीमत पर बेचने की आवश्यकता नहीं होती।

न्यूनतम कीमत P_1 **,4** = प्रचलित संतुलित <u>कीमत P= 3 बिन्दु E से अधिक निर्धारित होने से</u> किसान बडी क़ीमत $P_{1=4}$ पर अधिक पूर्ति B कर अपने उत्पादन का विस्तार करना आरंभ कर देंगे, जिससे कि बाजार में अतिरिक्त पूर्ति 2- 3.5 पैदा हो जाएगी। गेहूं की यह पूर्ति सरकार के द्वारा खरीद कर भंडार के रूप में रख ली जाती है जिसे बाद में गेहूं की कमी की दशा में बाजार में भेज दिया जाएगा।

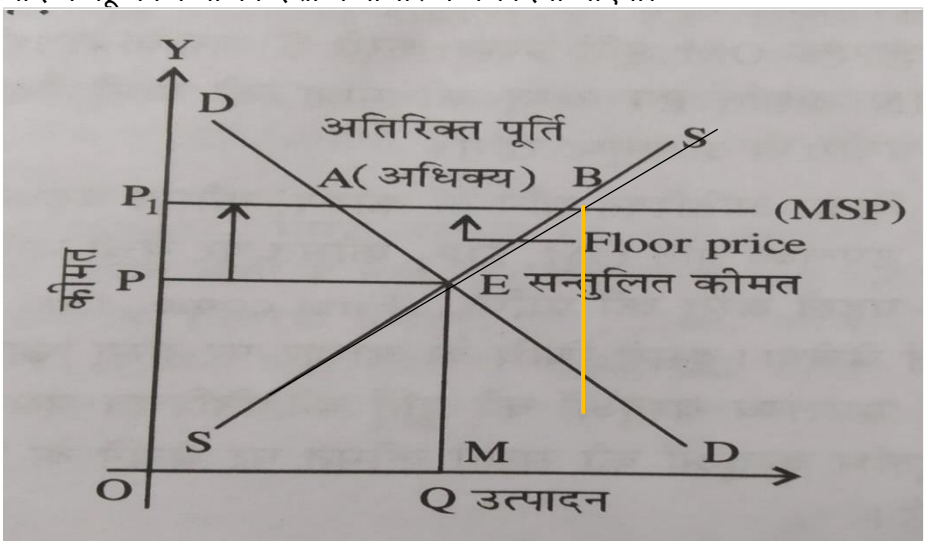

1

1

1

or

v

मिलान :

	Revenue आय	Formula सूत्र
1	AR औसत आय	TR / Q
2	TR कुल आय	AR × Q
3	MR सीमांत आय	ΔTR / ΔQ

1

1

1

4. i	**पूर्ण प्रतियोगिता बाजार व विशेषताएं:** **पू र्ण प्रतियोगिता बाजार-** पूर्ण प्रतियोगिता बाजार वह बाजार है जिसमें किसी वस्तु को बेचने वाले बहुत से क्रेता-विक्रेता होते हैं और सभी की वस्तुएं एक जैसी होती हैं अर्थात वस्तुएं समरूप होती हैं इस बाजार में वस्तु की कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित की जाती है और फर्में कीमत स्वीकार करती है जहां बाजार मांग वक्र और बाजार पूर्ति वक्र एक दूसरे को परस्पर काटते हैं वहां पर संतुलित कीमत का निर्धारण होता है । **विशेषताएं:** **-विक्रेताओं की अधिक संख्या 1** किसी वस्तु को बेचने वाले विक्रेताओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि किसी एक फॉर्म द्वारा पूर्ति में की जाने वाली वृद्धि या कमी का बाजार की कुल पूर्ति पर बहुत ही काम प्रभाव पड़ता है। **-समरूप वस्तुएं 2** इस बाजार में पाई जाने वाली वस्तुएं समरूप होती है अर्थात रंग रूप आकार की दृष्टि से वस्तुएं एक समान होती है उनमें किसी भी प्रकार की भिन्नता नहीं पाई जाती है। **फर्मों का स्वतंत्र प्रवे 3श व छोड़ना-** पूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में किसी उद्योग में कोई भी फर्म प्रवेश कर सकती है अथवा पुरानी फर्म उस उद्योग को छोड़ सकती है।फर्मो के प्रवेश पर किसी प्रकार का कानूनी प्रतिबंध नहीं होता है यातायात लागत का अभाव पूर्ण प्रतियोगिता की-स्थिति में बाजार के विभिन्न क्षेत्रों में वस्तु को भेजने के लिए कोई या फिर लागत नहीं खर्च करनी पड़ती पूरे बाजार में एक ही कीमत प्रचलित हो सकती है फर्म केवल अपने उत्पादन की मात्रा निर्धारित करती है।	1 1 1 1
or		
ii	**मांग को प्रभावित करने वाले तत्व:** **<u>-वस्तु की कीमत 1</u>** वस्तु की कीमत का वस्तु की मांग पर प्रभाव पड़ता है अन्य बातें समान रहने पर कीमत के बढ़ने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है और कीमत के काम होने पर वस्तु की मांग बढ़ जाती है। **<u>-उपभोक्ता की आय 2</u>** उपभोक्ता की आय के बढ़ने पर सामान्य वस्तुओं की मांग भी बढ़ जाती है और आय के कम होने पर इन वस्तुओं की मांग कम हो जाती है। **<u>-संबंधित वस्तुओं की कीमत 3</u>** एक वस्तु की मांग पर संबंधित वस्तुओं की कीमत में होने वाले परिवर्तन का भी प्रभाव पड़ता है संबंधित वस्तुएं दो प्रकार की हो सकती है प्रतिस्थापन वस्तुएं और पूरक वस्तुएं **<u>4 संभावनाएं:</u>** यदि उपभोक्ता को यह संभावना हो कि भविष्य में कीमत बढ़ जाएगी, तो वह वर्तमान में वस्तु की प्रचलित कीमत पर उसकी अधिक मात्रा खरीदेगा। इसी प्रकार यदि उपभोक्ता को यह आशा है कि भविष्य में वस्तु की कीमत घट जाएगी तो वह वर्तमान में वस्तु की कम मांग करेगा।	1 1 1 1
iii	**<u>पूर्ति और मांग में एक साथ वृद्धि होने पर संतुलित कीमत पर प्रभाव :</u>** मांग और पूर्ति में एक साथ वृद्धि होने के तीन भाग हैं -: 1जब मांग और पूर्ति में एक समान वृद्धि हो। 2जब पूर्ति में मांग की अपेक्षा अधिक वृद्धि होती है। । 3जब मांग में पूर्ति की अपेक्षा अधिक वृद्धि होती है।	½ 1.5

	1पूर्ति और मांग में एक साथ समान वृद्धि होने पर: यदि पूर्ति में परिवर्तन और मांग में परिवर्तन एक समान रहता है तो मांग वक्र और पूर्ति वक्र दोनों एक नई बिंदु पर संतुलन करते हुए आपस में काटेंगे ,परंतु कीमत में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं रहेगा अर्थात मांग और पूर्ति दोनों में परिवर्तन तो होगा पर कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होगा। 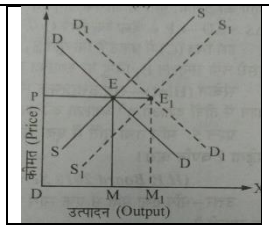 	1.5
	2मांग की अपेक्षा पूर्ति में अधिक वृद्धि होने पर: मांग की अपेक्षा आपूर्ति में अधिक परिवर्तन होता है तो मांगी गई वस्तु की मात्रा और मांग दोनों में वृद्धि होगी परंतु पूर्ति अधिक होने के कारण कीमत कम हो जाएगी । 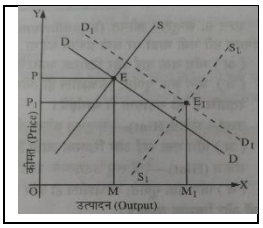 	1.5
	3पूर्ति की अपेक्षा मांग में अधिक वृद्धि होने पर: पूर्ति की अपेक्षा मांग में अधिक वृद्धि होने की स्थिति में मांग बढ़ जाती है और जिसके कारण पूर्ति की अपेक्षा मांग पर अधिक प्रभाव पड़ने के कारण कीमतों में अधिक बदलाव होता है और कीमत बढ़ती है 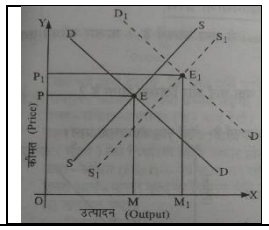 	
Part	**C (Macro Economics)**	
6. i	**औसत उपभोग प्रवृति:** आय रु 10000 = बचत =2 रु 000 औसत उपभोग प्रवृति = **उपभोग**/ आय) APC (उपभोग – रु 10000 = 2रु 000 8000 = रु औसत उपभोग प्रवृति = उपभोग/ आय) APC10000/8000 = (10/8 = APC 0.8 =	1 1
ii	**बजटीय घाटे को नियंत्रित करने के दो क्या उपाय:** **-सरकारी व्यय को कम करना 1** सरकार अपने विकासेतर व्यय में कमी करके अपने खर्चों को कम कर सकती है। **सरकारी 2प्राप्तियां को बढ़ाना-** करो में वृद्धि करके और वे निवेश करके सरकार अपनी आय को बढ़ाकर अपने बजट के घाटे को कम कर सकती है।	1 1
iii	**प्रतिकूल भुगतान संतुलन को सुधारने के दो कोई क्या उपाय:** **प्रतिकूल भुगतान संतुलन को सुधारने के उपाय:** **आयात प्रतिस्थापन -**	

	आयात कर लगाकर आयत कोटा को निश्चित करके सरकार अपने आयातों को कम कर सकती है। **निर्यात प्रोत्साहन -** निर्यातों को बढ़ाकर सरकार अपनी आय को बढ़ाकर प्रतिकूल भुगतान संतुलन के घाटे को कम कर सकती है।	1 1
or		
iv	**आय के मौद्रिक प्रवाह तथा वास्तविक प्रवाह:** **<u>मौद्रिक प्रवाह:</u>** वह प्रवाह जिसमें अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में केवल मुद्रा का चक्रीय रूप में प्रवाह होता है। इसमे उत्पादन प्रक्रिया के दोरान भूमि पूंजी व उद्यमी को मुद्रा के रूप ,श्रम , मे क्रमशकिराया ब्याज,मजदूरी , व लाभ भुगतान किया जाता है । **<u>वास्तविक प्रवाह:</u>** वह प्रवाह जिसमें अर्थव्यवस्था की विभिन्न क्षेत्रों में वस्तुओं और सेवाओं का चक्रीय रूप में प्रवाह होता है। इसमे उत्पादन प्रक्रिया के दोरान भूमिपूंजी व उद्यमी को ,श्रम , उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं रूप मे भुगतान किया जाता है ।	1 1
7. i	**<u>साधन लागत पर शुद्ध घरेलू आय</u>** **साधन लागत पर शुद्ध घरेलू आय = बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर - विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय** **शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर - आर्थिक सहायता** **= 50 - 30 = 20** **साधन लागत पर शुद्ध घरेलू आय** = 1500- 20-15 =1500-35 = 1465 **रकरोड़**	2 1
ii	**<u>बजट के प्रमुख उद्देश्य:</u>** बजट एक वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमानित आय तथा व्यय का ब्यौरा है, जिसके आधार पर सरकार की आगामी वर्ष की योजनाएं बनती है । बजट के उद्देश्य **:आय तथा संपत्ति का पुन वितरण 1** सरकारी बजट से सरकार के कराधान तथा आर्थिक सहायता संबंधी व्यापक नीतियों का ज्ञान <u>प्रा</u>प्त होता है अर्थव्यवस्था में आय और संपत्ति के बंटवारे में सुधार लाने हेतु सरकार कराधान तथा आर्थिक सहायता के लिए वितिय उपकरणों का उपयोग करती है। **साधनों का पुनः 2आवंटन:** बजट का उद्देश्य अर्थव्यवस्था में साधनों का पुनः आवंटन करना है ताकि अधिकतम लाभ और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके। **-आर्थिक स्थिरता 3** बजट सरकार के हाथ में एक महत्वपूर्ण नीति अस्त्र है, जिसके प्रयोग द्वारा सरकार स्फीति और अव-स्फीति की स्थितियों का मुकाबला करती है।	1 1 1

iii	**<u>प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर में अंतर:</u>** **1अंतिम भार :** प्रत्यक्ष कर वे कर हैं जिनका अंतिम भार उस व्यक्ति को सहन करना पड़ता है जो उनका भुगतान सरकार को करता है इसके विपरीत अप्रत्यक्ष कर वे कर हैं जिनका भुगतान सरकार को एक व्यक्ति करता है तथा उसका अंतिम भर किसी दूसरे व्यक्ति पर पड़ता है। **:करों का टालना 2** प्रत्यक्ष करों को दूसरे व्यक्तियों पर नहीं डाला जा सकता जबकि अप्रत्यक्ष करों को दूसरे व्यक्तियों पर टाला जा सकता है। **प्रगतिशील 3व प्रतिगामी कर:** प्रत्यक्ष कर प्रायः प्रगतिशील होते हैं जबकि अप्रत्यक्ष कर प्रायः प्रतिगामी होते हैं।	1 1 1
iv	**विदेशी विनिमय बाजार तथा इसके प्रमुख दो कार्य:** **<u>विदेशी विनिमय बाजार का अर्थ-</u>** विदेशी विनिमय बाजार वह बाजार है जिसमें संसार के विभिन्न देशों की राष्ट्रीय करेंसियो को बेचा या खरीदा जाता है। **<u>प्रमुख दो कार्य-</u>** **<u>:हस्तांतरण कार्य 1</u>** इससे अभिप्राय है कि संसार के विभिन्न देशों में विदेशी विनिमय के रूप में क्रय शक्ति का हस्तांतरण करता है। **<u>-साख कार्य 2</u>** साख कार्य से इसका अभिप्राय है संसार के विभिन्न देशों में वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात और आयात के लिए विदेशी विनिमय के रूप में साख की उपलब्धि करना।	1 1 1
v	Match the Following (मिलान करें) : **Column A** / **Column B** 1 ΔY/ ΔI — K 2 MPC+MPS — 1 3 MPC — ΔC/ ΔY	1 1 1
8. i	**<u>मुद्रा व मुख्य कार्य</u>** **<u>मुद्रा</u>** मुद्रा कोई भी वस्तु जिसे कानूनन व सामान्य स्वीकृती हो, वस्तु विनिमय का माध्यम हो, मूल्य का माप तथा मूल्य का संचय करती हो उसे मुद्रा कहा जाता है। **<u>मुख्य के कार्य</u>** **प्राथमिक कार्य** **गौण कार्य** **आकस्मिक कार्य**	1

	प्राथमिक कार्य **विनिमय का माध्यम** इससे अभिप्राय है की मुद्रा के रूप में व्यक्ति अपनी वस्तुओं को बे च ता है तथा कोई अन्य व्यक्ति उन वस्तुओं को खरीदता है। इस प्रकार क्रय विक्रय दोनों के बीच में माध्यम का कार्य रती है **मूल्य का मापदंड** मूल्य के मापदंड से अभिप्राय है कि मुद्रा हर एक वस्तू व सेवा के मूल्य को मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है जो कि मूल्य की इकाई का कार्य करती है। अर्थात मुद्रा के द्वारा सभी वस्तुओं के मूल्य को मापा तथा कीमत के रूप मे व्यक्त किया जा सकता है **गौण कार्य** **स्थगित भुगतानों का मा न** जिन लेनदेन का भुगतान हम उसी क्षण ना करके भविष्य के लिए त्याग देते हैं उसे स्थगित भुगतान कहते हैं इस प्रकार मुद्रा ऋणों के भुगतान का भी कार्य करती है **आकस्मिक कार्य** **साख निर्माण का आधार** साख निर्माण भी संभव हो पाया है मुद्रा के कारण चेक, ड्राफ्ट इत्यादि का प्रयोग होना संभव हो पाया है जो की साख निर्माण मे सहायक होता है।	1 1 1 1
9. i	**राष्ट्रीय आय को मापने की आय विधि:** **आय विधि-** यहविधि वह विधि है जो एक लेखा वर्ष में उत्पादन के साधनों जैसे भूमि श्रम पूंजी तथा उद्यमी को उनकी उत्पादक सेवाओं के बदले में मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ के रूप में किए गए भुगतान की गणना करके उसमे विदेश से प्राप्त शुद्ध साधन आय का जोड़ कर राष्ट्रीय आय को मापती है ,जिसे सामान्य निवासियों द्वारा शेष विश्व में प्राप्त साधन आय- गैर निवासियों द्वारा उस देश में प्राप्त साधन आय द्वारा ज्ञात किया जाता है। **आय विधि के कदम-** **पहला कदम :उत्पादक उद्योगों की पहचान तथा वर्गीकरण-** इस विधि में सबसे पहले उन सभी उत्पादक उद्योगों की जानकारी प्राप्त की जाती है जो उत्पादन के साधनों का प्रयोग करते हैं सभी उत्पादक उद्योगों को तीन क्षेत्रों में बांटा जाता है- प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीय, क्षेत्र तथा तृतीय क्षेत्र। **दूसरा कदम :साधन आय का वर्गीकरण-** साधन आय से अभिप्राय किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित उस आय से है जो उसे साधन सेवा के बदले में प्राप्त होती है साधन आय को मुख्य रूप से निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है: 1 कर्मचारियों का पारिश्रमिक 2 परिचालन अधिशेष मिश्रित आय 3 **शुद्ध घरेलू आय =कर्मचारियों का पारिश्रमिकमिश्रित आय+परिचालन अधिशेष+** **तीसरा कदम -राष्ट्रीय आय की गणना** उपरोक्त प्राप्त शुद्ध घरेलू आय में यदि विदेश से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ दिया जाए तो राष्ट्रीय को प्राप्त किया जा सकता है। विदेश से प्राप्त शुद्ध साधन आय = सामान्य निवासियों द्वारा शेष विश्व में प्राप्त साधन आय- गैर निवासियों द्वारा उस देश में प्राप्त साधन आय	2 1 1

		1
ii	**सकल राष्ट्रीय आय :** अर्थव्यवस्था की आयकरोड रुपए 3000 = सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) = 0.75 निवेश मे परिवर्तन ΔI 200= करोड रुपए गुणक K = $\frac{1}{1-MPC}$ = $\frac{1}{1-0.75}$ = $\frac{1}{0.25}$ = $\frac{100}{25}$ K 4 = आय मे परिवर्तन ΔY = K × ΔI 200 ×4 = 800 = करोड रुपए **<u>इसलिए सकल राष्ट्रीय आय</u>=** अर्थव्यवस्था की आय + करोड रुपए 3000 आय मे परिवर्तन 800करोड रुपए सकल राष्ट्रीय आय**<u>करोड रुपए 3800</u>** =	3 1 1

ii	**केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंक में अंतर:** **क्र .सं** | **आधार** | **केंद्रीय बैंक** | **व्यापारिक बैंक** 1 | संख्या | केंद्रीय बैंक देश मे केवल एक ही होता है। | जबकि व्यापारिक बैंक अनेक होते हैं। 2 | उद्देश्य | केंद्रीय बैंक का उद्देश्य जनकल्याण व देश की वित्तीय प्रणाली का प्रबंध करना होता है। | व्यापारिक बैंक लोगों का पैसा जमा कर व उधार देकर उद्देश्य केवल लाभ कमाना होता है। 3 | जन व्यवहार | यह बैंक व्यापारिक बैंकों के कार्य का निरीक्षण व नियंत्रण करता है और जनता के साथ इसका कोई प्रत्यक्ष लेंन देन - नहीं होता। | इसका जनता के साथ प्रत्यक्ष रूप से लेन-देन होता है। 4 | नोट जारी करना | केंद्रीय बैंक को नोट जारी करने का अधिकार होता है। | यह बैंक नोट जारी नहीं कर सकते। 5 | बैंकर | सरकार का बैंक होता है। बैंक सरकार के अधीन होता है और सरकार के नीतियों को लागू करने में भूमिका निभाता है। | जनता का बैंकर होता है जो केंद्रीय बैंक के निर्देशन अनुसार भी कार्यकर्ता है।	1 1 1 1 1